



इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, बेमेतरा



अंक : 5 Mobile : 7067287806 www.kvkbemetara.org Email : kvkbemetara@gmail.com जुलाई-सितंबर 2021 वर्ष-02

संरक्षक

डॉ. एस.के. पाटील
माननीय कुलपति
इं.गा.कृ.वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक

डॉ. एस.सी. मुखर्जी
निदेशक विस्तार सेवाएं
इं.गा.कृ.वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणास्त्रोत

डॉ.एस.आर.के.सिंह,
निदेशक, भा.कृ.अनु.प.
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग
अनुसंधान संस्थान
जोन 09, जबलपुर (म.प्र.)

प्रधान संपादक

डॉ. जी.पी. आयम
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृ.वि.के. बेमेतरा

संपादक

डॉ. वेधिका साहू
विषय वस्तु विशेषज्ञ
कृ.वि.के. बेमेतरा

संपादक मंडल

श्री तोषण ठाकुर
डॉ. एकता ताम्रकार
डॉ. जितेन्द्र जोशी
डॉ. चेतना बंजारे
डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय
डॉ. हेमन्त साहू
श्री शिव सिन्हा

लघु धान्य फसल

छत्तीसगढ़ की उच्चहन भूमि पर वर्षों से किसानों द्वारा उगायी जाने वाली फसलें मड़िया (रागी), कोदो (कोदो मिलेट), कोसरा (कुटकी, लिटिल मिलेट), और सावाँ (वान्याड मिलेट) जिसे सम्मिलित रूप से "मिलेट" या "लघुधान्य" फसलों के नाम से जाना जाता है। इन फसलों की कुछ विशेषताएं हैं जिनके कारण इन्हें व्यावसायिक रूप से प्रसंस्कृत किया जा रहा है तथा उपयोगिता बढ़ाने बाबत कृषि कार्यमाला को उन्नत तकनीकी से सुसज्जित किया जा रहा है। इसकी उच्च गुणवत्ता के कारण फसलों की विभिन्न तरह के उत्पादों, जिनका उपयोग बड़े-बड़े शहरों में रहने वालों से लेकर उपनगरी लोगों द्वारा किया जा रहा है। फसलों की उत्पादकता कम है क्योंकि उन्नत कृषि तकनीक का उचित उपयोग नहीं हो पा रहा है, जिससे उत्पादकता बढ़ाई जा सके।

वर्तमान समय में शारीरिक स्वास्थ्य को लेकर ग्रामीण एवं शहर वासी भी परेशान हैं, जिससे निजात पाने के लिये अपनी पोषणाहार में बदली या नियमन करने लगे हैं क्योंकि ऐसा माना जाता है कि "प्रिक्ॉशन इज बैटर देन क्योर" इन्हीं शब्दों के कारण लोग भोजन के विभिन्न अवयवों को अनाजों में ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं। लघु धान्य फसलें पोषक तत्वों से परिपूर्ण हैं, जिनकी तुलना में अन्य अनाज काफी कम स्तर साबित हो रहे हैं। नीचे दिये गये पोषक तत्व विवरण (सारणी-1) से इनकी महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। लघु धान्य फसलों में पाया जाने वाला "कोर्बोहाइड्रेट्स" चावल, गेहूँ व अन्य अनाज की तुलना में अधिक धीमी गति से पाचन होकर रक्त में मिलता है। इसी गुण के कारण इन फसलों को लोग अपने भोजन का अवयव भी बना रहे हैं, जिसके कारण रक्त में शर्करा की मात्रा अन्य अनाजों की तुलना में कम हो जाती है और ग्लूकोज से ऊर्जा मिलती रहती है एवं अचानक शर्करा रक्त में नहीं मिल पाता, जिससे शक्कर की बीमारी वाले रोगियों के लिये लाभप्रद है, और इसे प्राप्त करने के लिये इनसूलिन हार्मोन्स का स्रावण होना अति आवश्यक है, ताकि रक्त कोशिका द्वारा अवशोषण किया जा सके।

सारणी-1 : लघु धान्य फसलों एवं धान्य फसलों के पोषक तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन (प्रति 100 ग्राम दानों में)

फसले	प्रोटीन (ग्रा.)	कार्बोहाइड्रेट (ग्रा.)	वसा (ग्रा.)	रेशा (ग्रा.)	खनिज (ग्रा.)	कैल्शियम (मि.ग्रा.)	फास्फोरस (मि.ग्रा.)	लौह (मि.ग्रा.)
लघु धान्य फसलें								
रागी	7.3	72.0	1.3	3.6	2.7	344	283	3.9
कोदो	8.3	65.0	1.4	9.0	2.6	27	188	12.0
कुटकी	7.7	67.0	4.7	7.6	1.5	17	220	6.0
सावाँ	6.2	65.5	2.2	9.8	4.4	11	280	15.0
धान्य फसलें								
गेहूँ	11.8	71.2	1.5	1.2	1.5	41	3.6	5.3
धान	6.8	78.2	0.5	0.2	0.6	45	160	-

भूमि की तैयारी :

भूमि की तैयारी के लिए पहली जुताई गहरी करें। तत्पश्चात दो से तीन जुताई कर पाटा चलावें। इस प्रकार तैयार भूमि में कतार में लघु धान्य फसलों की बुवाई करें।

हर कदम, हर डगर, किसानों का हमसफर, किसानों की सेवा में तत्पर, कृषि विज्ञान केन्द्र

फसलें

क्र.	कृषि कार्य	रागी	कोदो	कुटकी	सावाँ
1.	बीज की मात्रा कि.ग्रा./हे.	10-12	8-10	5-6	12-15
2.	बीज की बुवाई	15 जून से 30 जुलाई	15 जून से 20 जुलाई	15 जून से 15 जुलाई	15 जून से 15 जुलाई
3.	पोषक तत्व (NPK) कि.ग्रा./हे.	50:40:20	40:30:20	20:10:10	20:20:10
4.	नींदा नियंत्रण	35 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखें और नत्रजन की दूसरी मात्रा दें। आइसोप्रोट्यूरान नामक निंदा नाशक का 0.5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व अंकुरण पूर्व उपयोग करने से अच्छी प्रकार से निंदा नियंत्रण होता है।	35 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखें और नत्रजन की दूसरी मात्रा दें। आइसोप्रोट्यूरान नामक निंदा नाशक का 0.5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व अंकुरण पूर्व उपयोग करने से अच्छी प्रकार से निंदा नियंत्रण होता है।	25 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखें और नत्रजन की दूसरी मात्रा दें। आइसोप्रोट्यूरान नामक निंदा नाशक का 0.5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व अंकुरण पूर्व उपयोग करने से अच्छी प्रकार से निंदा नियंत्रण होता है।	25 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखें और नत्रजन की दूसरी मात्रा दें
5.	कटाई	दाने भूरे हो तब	पत्तियाँ पीली होने लगे एवं दाना पीले होने लगे तब	दाना काले चमकीले हो तब	दाना स्लेटी रंग का हाने लगे तब
6.	उपज	20-25 किं./हे.	15-20 किं./हे.	8-10 किं./हे.	12-15 किं./हे.

बीजोपचार : लघु फसलों हेतु एजोटोबैक्टर एवं पी.एस.बी. उत्तम जैव उर्वरक है, बीज बोने से पहले फफूंदनाशक कार्बेन्डाजिम या थायरम नामक दवा (3 ग्राम) प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें। बुवाई शुरू करने से पहले उपरोक्त उपचारित बीज को एजोटोबैक्टर तथा पी.एस.बी. कल्चर की 5-10 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से उपचारित करें।

उन्नत किस्में :

रागी (मड़िया) :

- **इंदिरा रागी-1 :** यह किस्म इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। यह किस्म 120-125 दिन में पक कर तैयार होती है। इसका औसत उत्पादन 27-30 किं./हे. है और यह ब्लास्ट बीमारी हेतु अवरोधी है।
- **छत्तीसगढ़ रागी-2 :** यह किस्म असिंचित क्षेत्र हेतु अत्यंत उपयुक्त है, यह 115-118 दिन में पकती है। और 30-32 किं./हे. उत्पादन देती है।
- **छत्तीसगढ़ रागी-3 :** यह किस्म इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। यह किस्म 115-118 दिन में पक कर तैयार होती है। इसका औसत उत्पादन 30-35 किं./हे. है।
- **चंपावती (वी.आर. 708) :** यह किस्म उन क्षेत्रों हेतु उपयुक्त है जहाँ पकने के समय में मृदा में नमी की कमी होती है। पौधे की ऊँचाई 75-80 से.मी. पकने में 90-95 दिन लगते हैं। पौधे हरे दानेदार धब्बे, बालियाँ मध्यम, अन्दर की ओर मुड़ी हुई होती है। विशेष रूप से सूखा व झुलसा सहनशील है। उत्पादकता 18-20 किं./हे. है।
- **जी.पी.यू. 28 :** सिंचित व असिंचित दोनों दशा में अच्छा उत्पादन देती है। मध्यम ऊँचाई एवं अन्दर की ओर मुड़ी हुई बालियाँ होती है। यह 110-115 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है उपज 20-25 किं./हे. तक की होती है।



कोदों :

- **इंदिरा कोदो-1 :** यह किस्म इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। प्रजाति 100-115 दिनों में पक जाती है तथा 20-23 किं./हे. उत्पादन देती है तथा स्मट एवं तना मक्खी के लिये सहनशील है।
- **छत्तीसगढ़ कोदो-2 :** यह किस्म इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। किस्म 95-100 दिन में पक जाती है तथा 22-25 किं./हे. उत्पादन देती है। तथा हेड स्मट के लिए सहनशील है।
- **छत्तीसगढ़ कोदो-3 :** यह किस्म इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। किस्म 100-105 दिन में पक जाती है तथा 25-27 किं./हे. उत्पादन देती है।
- **जे.के. 41 :** कम वर्षा वाले क्षेत्रों हेतु उपयुक्त है, तना मजबूत, अच्छे कंसे (8-15) के लिये अनुशंसित है, जो पकने की अवस्था तक हरा रहता है। हर दशा में दो फिंगर देती है। उत्पादन क्षमता 18-20 किं./हे. होती है।
- **जे.के. 48 (डी.पी.एस. 48) :** वर्षा आधारित हल्की भूमि में सफलता पूर्वक कृषि की जा सकती है। सीधे बढ़कर, कत्थई व भरी हुई बालियाँ, एक कंसे पर दो बालियाँ होती है, उत्पादन की दृष्टि से 20-22 किं./हे. देती है।
- **जी.पी.यू.के. 3 :** यह किस्म मध्यम अवधि की है, जो अच्छे कंसे के साथ ही ऊँचाई भी मध्यम होती है। लगभग सभी गांठों पर पुष्पन भी होता है। बालियाँ सधी हुई एवं उत्पादकता 18-20 किं./हे. है।



कुटकी

- **छत्तीसगढ़ कुटकी-1 :** यह किस्म इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। यह किस्म 80-85 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। उत्पादकता 12-14 किं./हे. है। यह किस्म राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित की गई है। यह किस्म तना मक्खी के लिए मध्यम प्रतिरोधी है।



- **छत्तीसगढ़ कुटकी-2** : यह किस्म इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। इस किस्म की प्रजाति 60-80 से.मी. तक बढ़ती है तथा इसमें सुनहरे रंग की बालियाँ सधी हुई होती है। 80-90 दिन में पककर 10-12 किं/हे. तक उत्पादन देती है। अन्य किस्मों की तुलना में अधिक लौह तत्व (28 मिलीग्राम/100 ग्राम) पाया जाता है।
- **छत्तीसगढ़ सोनकुटकी** : यह किस्म इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। यह किस्म 90-95 दिन में पककर तैयार हो जाती है। उत्पादकता 13-15 किं/हे. है। यह किस्म तना मक्खी के लिए मध्यम प्रतिरोधी है।
- **जे.के. 8** : यह किस्म कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिये अति उपयोगी है। 65-70 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इसकी उत्पादक क्षमता 8-10 किं/हे. है।
- **बी.जी. 1** : यह किस्म कम उपजाऊ वाली भूमि में उगाई जाती है। यह 65-70 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है और 8-10 किं/हे. सामान्य दशा उपज देती है।

सावाँ :

- **व्ही.एल. 29** : सभी सावाँ उगाने वाले क्षेत्रों, केवल आंध्रप्रदेश व तमिलनाडु को छोड़कर उपयुक्त है, इनकी गांठों में हल्के कथई धब्बे होते हैं। बालियाँ लम्बी व मुड़ी हुई होती है। उत्पादन 12-15 किं/हे. होती है।
- **के. 1** : पौधे की ऊँचाई 130-140 से.मी. बँगनी गांठों के साथ हरे दिखाई देते हैं। बालियाँ ढीली व नाशपाती के आकार की दाने हल्के सफेद रंग के होते हैं। 80-85 दिनों में पककर 10-15 किं/हे. उपज देती है।



लघु धान्य फसलों में पौध संरक्षण :

लघु धान्य फसलों के रोग एवं रोग एवं प्रबंधन:-

1. **झुलसा (ब्लास्ट)** : यह तीन रूपों में रागी में दिखाई देती है। प्रारम्भिक अवस्था में पत्तियों में दिखाई देती है। इससे प्रभावित भागों पर आँख अथवा नाव के समान धब्बे बनते हैं, जिनके मध्य में भूरे धूसर रंग के गहरे धब्बे होते हैं। द्वितीय अवस्था में पत्तियों के आधारों में, फिर अंत में बालियों पर रोग के लक्षण दिखाई देते हैं। प्रारम्भिक पत्ती अवस्था में कार्बेण्डाजिम (0.1 प्रतिशत) या मोकोजेब (0.2 प्रतिशत) या ट्राइसाइक्लोजोल (0.06 प्रतिशत) दवा का पहला छिड़काव 50 प्रतिशत पुष्पन के समय व दूसरा छिड़काव इसके 10 दिन के बाद करने पर गर्दन व दानों में लगी झुलसा को नियंत्रित किया जा सकता है।
2. **अंगमारी (ब्लाइट)** : इसमें पत्तियों की बाहरी सतहों पर भूरे रंग की धारियाँ बनती हैं, जो बाद में पूरी पत्तियों में फैल जाती है। यह नर्सरी अवस्था में भी नुकसान पहुँचाता है। इस रोग से नियंत्रण हेतु केप्टान या थाइरम (2 ग्राम दवा) या मेन्कोजेब 2 ग्राम/किलो बीज की दर से बीजोपचार एवं कार्बेण्डाजिम 1 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिए।
3. **पर्णच्छद झुलसा (शीथ ब्लाइट):-**
पर्णच्छद झुलसा या शीथ ब्लाइट या बैन्डेड ब्लाइट रोग पौधे कंसे निकलने के समय प्रायः दिखाई देते हैं। पर्णच्छद पर 2 से 5 से.मी. लम्बे तथा 0.5 से 1 से.मी. चौड़े धब्बे बनते हैं जो कि शुरुआत में भूरे रहते हैं परन्तु कुछ समय पश्चात यह धब्बे बदरंग से धूसर रंग के हो जाते हैं। धब्बों के मध्य भाग मटमैला तथा किनारे का भाग भूरा होता है। रोग के उग्र अवस्था में तने के उपर की ओर मेल जाता है तथा पौधे गिरने लगते हैं।
4. **कंडुआ (स्मट)** : कोदो की फसल को बुरी तरह प्रभावित करता है। यह बालियाँ एवं दानों पर काले रंग की फफूंदी वृद्धि दिखाई देती है, जिससे दाने खराब हो जाते हैं। प्रभावित बालियों को निकाल कर जला दें। इसके नियंत्रण के लिये फफूंदी नाशक से बीजोपचार किया जाना चाहिए।

जैवनियंत्रण : रागी, कोदो एवं कुटकी में झुलसा (ब्लास्ट), अंगमारी (ब्लाइट) एवं शीथ ब्लाइट के रोकथाम के लिए स्युडोमोनास लोरेसेंस + ट्राइकोडर्मा हारजियनम + वेसिलजसवटीलिस को मृदा में 1 किलो टेलकम पावडर के मिश्रण को 25 किलो सड़ी हुई गोबर खाद में मिक्स कर बुवाई से 15 दिन पूर्व में उपयोग करने पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है।

रासायनिक प्रबंधन

1. झुलसा रोग

प्रारम्भिक पत्ती अवस्था में कार्बेण्डाजिम 0.1 प्रतिशत या मेन्कोजेब 0.2 प्रतिशत छिड़काव करें या ट्राइसाइक्लोजोल 0.06 प्रतिशत इसी दवा का 50 प्रतिशत पुष्पन के समय व दूसरा छिड़काव इसके 10 दिन के बाद करने पर गर्दन व दानों में लगी झुलसा को नियंत्रित किया जा सकता है। जैव कारक स्युडोमोनास रोगों से सभी नियंत्रण में कार्य करता है।

2. अंगमारी (ब्लाइट)

कॉपरसल्फेट से बीज उपचारित करें। इसके लिए मेन्कोजेब 2 ग्राम/किलोबीज से भी नियंत्रण होता है।

लघु धान्य फसलों में कीट प्रबंधन :

तनाछेदक : तना छेदक कंसे की अवस्था में आने पर तने में छेद बनाकर बाली आने की स्थिति को रोकता है। यह कीट, पौधों के पुष्पन की अवस्था में आता है, जिसके कारण पुष्पन नहीं हो पाता है, और बाली खींचने पर आसानी से बाहर निकल आती है। इसके नियंत्रण हेतु 2 प्रतिशत क्लोरपायरीफॉस या लेम्डासाइलोथिन 5 ई.सी. 250 मि.ली./हे. घोल बनाकर प्रति एकड़ 4-6 किलोग्राम उपयोग करें।

जुलाई 2021

- बुवाई के पूर्व बीज को फफूंदनाशक दवा से उपचारित करें। तत्पश्चात जैव उर्वरक जैसे- पी.एस.बी., राजोबियम, एजेटोबेक्टर से उपचारित कर बुवाई करें।
- नर्सरी तैयार होने के उपरान्त मिर्च, बैंगन एवं फूलगोभी की रोपाई करें।
- अदरक, हल्दी, भिण्डी एवं बरबट्टी की निंदाई गुड़ाई एवं पानी न गिरने पर सिंचाई की उचित व्यवस्था करें।
- केले की पौधे की रोपाई का कार्य आरंभ करें।
- नये फल वृक्षों को लगाने का कार्य आरंभ करें।
- पशुओं को बारिश का गंदा पानी नहीं पीने दें।
- पशुपालक, नालियों की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें।
- पशुओं को गीले एवं पानी भरे स्थानों पर न चरायें।
- सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु निंदानाशक दवा का छिड़काव अनुशंसित मात्रा में करें।
- गन्ने की नई फसल में आवश्यकतानुसार निंदाई-गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ावें।
- धान की रोपाई हमेशा कतारों में करें। इससे पौध संख्या पर्याप्त रहती है तथा कृषि क्रियाओं को करने में सहायता मिलती है।

अगस्त 2021

- देर हो जाने पर यदि धान की रोपाई इस माह करनी पड़ रही हो तो पौधे की दूरी कम रखें एवं 3-4 पौधों का उपयोग करें।
- किसान भाईयों को सलाह है कि धान की विभिन्न अवस्थाओं में अनुशंसित मात्रा में नत्रजन का छिड़काव करें।
- धान में यूरिया का छिड़काव करने के पूर्व खेत में पानी की मात्रा कम कर दें।
- केले में वाटर सकर्स की पहचान कर निकालने का कार्य करते रहें एवं जिन पौधों में फूल/फल आया हो तुरन्त बांस लगाकर सहारा प्रदान करें।
- मुर्गियों को कृमि रोग से बचाव हेतु हर तीसरे माह में कृमिनाशक दवा खिलावें। मूंग, तिल, मक्का एवं ज्वार (चारे हेतु) आदि के बीजों को उपचारित कर कतारों में बुवाई करें।
- खेत में हरी काई का प्रकोप दिख रहा हो तो पानी को निकाल दें। खेत में जिस जगह से पानी अंदर जाता है वहाँ कॉपर सल्फेट को पोटली में बांध कर रखें।
- धान के खेत में लगातार पानी भरकर न रखें।
- शिमला मिर्च की नर्सरी तैयार करें।
- खरीफ प्याज की खेत में रोपाई करें। गुलदाऊदी एवं चाइना एस्टर के लिए भूमि की तैयारी करें।

सितम्बर 2021

- धान फसल नहीं लगा पाने की स्थिति में कुल्थी, रामतिल, मूंग उड़द, तोरिया, मक्का, सूरजमुखी, सब्जी एवं चारे वाली फसलों की बुवाई करें।
- धान फसल पर पीला तना छेदक कीट के वयस्क दिखाई देने पर फसल का निरीक्षण के करें साथ ही डेडहार्ट (सुखी पत्ती) को खींचकर निकाल दें।
- धान के फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राइसाइक्लाजोल 0.6 ग्रा./ली. पानी का छिड़काव करना चाहिए।
- धान में तना छेदक कीट की निगरानी हेतु में फेरोमेन ट्रेप 2 नग प्रति एकड़ की दर से उपयोग करें।
- उच्चहन धान खेतों को नींदा युक्त रखें एवं बारिश होने पर नत्रजन उर्वरक का उपयोग करें।
- धान में जीवाणुजनित झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो तो खेत से पानी निकालकर 3 से 4 दिन खुला रखें तथा 25 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- अदरक एवं हल्दी की फसलों में हल्की मिट्टी चढ़ाकर पलवार करें।
- आम फलन की समाप्ति के पश्चात रोग ग्रस्त शाखाओं की हल्की छँटाई का कार्य करें।
- शिमला मिर्च की रोपाई का कार्य करें।
- खरीफ प्याज को खेत में रोपाई करें।

क्र.	नाम	पदनाम एवं विशेषज्ञता	मोबाईल नंबर
1	डॉ. जी.पी. आयम	वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन	9406356172
2	श्री तोषण ठाकुर	वि.व.वि., मत्स्यकी	9826687395
3	डॉ. एकता ताम्रकार	वि.व.वि., कीट विज्ञान	9993442554
4	डॉ. जितेन्द्र जोशी	वि.व.वि., फार्म मशीनरी एवं पावर इंजी.	7805039366
5	डॉ. चेतना बंजारे	वि.व.वि., उद्यानिकी	8962765997
6	डॉ. वेधिका साहू	वि.व.वि., मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन	8319397676
7	डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय	वि.व.वि., सस्य विज्ञान	7987758329
8	डॉ. हेमन्त साहू	प्रक्षेत्र प्रबंधक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन	9039261949

प्रेषक

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

कृषि विज्ञान केन्द्र, बेमेतरा

जिला- बेमेतरा (छ.ग.) पिन कोड-491335

बुक पोस्ट

सेवा में,

श्री/श्रीमती/डॉ.

.....